DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Balachakia
BRABU - Muzaffarpur

B.A. (Hons.), part — I
Subject — Sanskrit
Paper — I

5 X 3 = 15 Marks

कारक सूत्र - व्याख्या

29. ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च (वार्तिक)

पूर्वकालिक क्रिया के द्योतक 'ल्यप्' प्रत्यय का लोप करने पर अर्थात् वाक्य में ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द के प्रत्यक्ष कहने की इच्छा न होने पर, उन क्रियाओं के कर्म और अधिकरण कारक अर्थों में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा - प्रासादात् प्रेक्षते, आसनात् प्रेक्षते (वह के ऊपर चढ़कर देखता है, आसन पर बैठकर देखता है)। इन वाक्यों में 'ल्यप्प्रत्ययान्त 'आरुह्य (चढ़कर' और 'उपविश्य (बैठकर)' - इन दो पदों का लोप हुआ है अर्थात् प्रयोग नहीं किया गया है, किन्तु उनका अर्थ यहाँ प्रतीत होता है, अतः उनके अर्थ 'आरोहण' और 'उपवेशन' क्रियाओं के प्रति कर्म औ अधिकरण 'प्रासाद' औ 'आसन' में पञ्चमी हो गयी।